

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया, ने भारत में चाय बागान उद्योग पर राष्ट्रीय परामर्श कार्यशालाओं का आयोजन किया, ताकि इसके ऐतिहासिक और समकालीन आयामों का अध्ययन किया जा सके और हाशिये पर पड़े समूहों को सशक्त बनाया जा सके

नई दिल्ली, 30 जनवरी, 2026

इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च (ICSSR) द्वारा प्रायोजित भारत के चाय बागान उद्योग पर केंद्रित लॉनिट्यूडिनल रिसर्च प्रोजेक्ट पर दो राष्ट्रीय परामर्श कार्यशालाओं का उद्घाटन 28 जनवरी, 2026 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया में किया गया। इसमें शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और विषय विशेषज्ञों को एक साथ लाया गया ताकि देश के चाय बागान उद्योग के ऐतिहासिक और समकालीन आयामों पर विचार-विमर्श किया जा सके।

"टी प्लांटेशन इंडस्ट्री: एक्सप्लोरिंग पोसिबिलिटीज़ एंड टूजेक्टरीज़" तथा "टूल डेवलपमेंट एंड फाइनलाइजेशन" विषयों पर आयोजित राष्ट्रीय परामर्श कार्यशालाएं प्रोजेक्ट टीम के प्री-फील्डवर्क के हिस्से क्रम में आयोजित की गईं। शैक्षिक अध्ययन विभाग को ICSSR के सामाजिक विज्ञान क्षेत्र में कार्य करने के मंडेट के हिस्से के रूप में ICSSR लॉनिट्यूडिनल रिसर्च ग्रांट अवार्ड किया गया है ताकि वंचित और हाशिये पर पड़े समूहों को सशक्त बनाया जा सके।

उद्घाटन समारोह के दौरान डॉ. तारिक अनवर द्वारा अनुवाद के साथ तिलावत-ए-कुरान शामिल था। इसके बाद श्री जीशान और उनकी टीम द्वारा जामिया तराना की भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई। विभाग के अध्यक्ष प्रो. एजाज़ मसीह ने आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों और मुख्य वक्ताओं का पारंपरिक असमिया "गमोसा" से स्वागत किया, जो असम की सांस्कृतिक विरासत और आतिथ्य का प्रतीक है।

प्रोजेक्ट समन्वयक, डॉ. काज़ी फरदौसी इस्लाम ने कार्यशाला की पृष्ठभूमि, उद्देश्यों और महत्व को साझा किया, जिसमें चाय बागान उद्योग पर इसके फोकस और कार्यशाला के अपेक्षित परिणामों की रूपरेखा बताई गई।

राष्ट्रीय परामर्श कार्यशालाओं का उद्देश्य भारत में बागान अर्थव्यवस्था का अवलोकन, बागान श्रमिकों के ऐतिहासिक आयाम, बागान श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, और चाय बागान क्षेत्रों में मानव विकास के माध्यम से कल्याणकारी योजनाओं के साथ-साथ तकनीकी हस्तक्षेप और श्रम अर्थव्यवस्था में बदलते रुझानों के माध्यम से बागान अर्थव्यवस्था और श्रम कल्याण के भविष्य जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना है। टूल डेवलपमेंट और अंतिम रूप देने की प्रक्रिया में पैनल संवादों और चर्चाओं के माध्यम से चाय जैसे बागान समाजों के अध्ययन में पद्धतिगत मुद्दों (टूल आयामों के फोकस क्षेत्र, फील्ड अनुमतियां और मंजूरी, डेटा संग्रह में शामिल नैतिकता, आदि) को समझने पर ध्यान केंद्रित किया गया। पहला मुख्य वक्तव्य "चाय बागान समुदाय और भारत की विकास आकांक्षाओं के संदर्भ में ICSSR का सामाजिक विकास एजेंडा" विषय पर दिया गया। वक्ता, प्रो. मनोज कुमार सक्सेना, सीनियर प्रोफेसर, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ हिमाचल प्रदेश, ने सामाजिक रूप से प्रासंगिक अनुसंधान को आगे बढ़ाने और सामाजिक विज्ञान की विद्वत्ता को राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं के साथ जोड़ने में ICSSR की भूमिका के महत्व पर बात की, विशेष रूप से समावेशी विकास, श्रम कल्याण और बागान अर्थव्यवस्थाओं में स्थिरता के संबंध में। वक्ता ने ICSSR के दृष्टिकोण के तहत सामाजिक विकास के दृष्टिकोण पर भी बात की।

प्रो. वर्जिनियस ज़ाक्सा ने असम में चाय श्रमिकों के ऐतिहासिक विकास से संबंधित मुख्य वक्तव्य दिया। इस संबोधन में बागान क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास, क्षेत्रीय विकास में इसके योगदान, और श्रम भर्ती प्रक्रियाओं, प्रवासन पैटर्न, और विभिन्न अवधियों में चाय श्रमिकों की सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों पर जोर दिया गया।

मुख्य वक्तव्य सत्रों ने कार्यशाला को एक मजबूत वैचारिक आधार प्रदान किया और विभिन्न हितधारकों के बीच निरंतर संवाद, अंतर-विषयक अनुसंधान, और बागान अर्थव्यवस्थाओं और चाय श्रम मुद्दों पर नीतिगत जुड़ाव की आवश्यकता पर जोर दिया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में, जेएमआई के कुलपति, प्रो. मज़हर आसिफ़ ने इस बात पर जोर दिया कि चाय न केवल असम बल्कि भारत की भी एक विरासत है, और इसका उत्पाद भारतीय मिट्टी में गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रो. आसिफ़ ने भारत के सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में चाय बागान उद्योग के महत्व पर प्रकाश डाला और चाय श्रमिक समुदायों के कल्याण के लिए साक्ष्य-आधारित अनुसंधान की आवश्यकता पर जोर दिया।

प्रो. आसिफ़ ने जेएमआई में प्रोजेक्ट टीम, प्रो. कौशल किशोर, विभाग के पूर्व अध्यक्ष- प्रो. अहरार हुसैन, शिक्षा संकाय के पूर्व डीन और अध्यक्ष- डॉ. समीर बाबू और डॉ. ज़ेबा तबस्सुम; तथा गुवाहाटी विश्वविद्यालय को बधाई दी, जहाँ प्रो. निवेदिता गोस्वामी भी प्रोजेक्ट निदेशकों में से एक हैं।

कार्यक्रम का समापन प्रोजेक्ट निदेशक, प्रो. कौशल किशोर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें गणमान्य व्यक्तियों, मुख्य वक्ताओं, प्रतिभागियों, आयोजकों और सहायक कर्मचारियों के योगदान को स्वीकार किया गया। कार्यशाला का औपचारिक समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी